# रत्नों से करें अपना उपचार

**हमारे** देश में रत्नों का इतिहास बहुत पुराना है। रत्नों को केवल इसलिए नहीं धारण किया जाता कि वे कीमती होते हैं और हमारी प्रतिष्ठा का प्रश्न उनसे जुड़ा होता है अपितु उनमें दिव्य औषधीय तथा रसायनिक गुण भी होते हैं। प्राचीन ज्योतिष-शस्त्र और रसायन शास्त्र से भी उनका घनिष्ठ संबंध है। इस प्रकार रत्न न केवल शरीर के बाहरी सौन्दर्य की वृद्धि करते हैं बल्कि उसे अनेक रोगों से भी बचाते हैं। खान के निकले पत्थरों की रत्नों की उपाधि दिए जाने के लिए जरूरी है कि उसमें पारदर्शिता का गुण हो साथ ही वे सुप्रकाशयुक्त और किरण-भेद हों। कुछ रत्न ऐसे भी होते हैं जिनके आरपार नहीं देखा जा सकता है। रत्नों की श्रेष्ठता आंकने के लिए उनकी स्थिरता को मापा जाता है। रत्नों की स्थिरता दो प्रकार के प्रभावों से होती है पहला यांत्रिक प्रभाव से और दूसरी रासायनिक प्रभाव से। रगड या दाब से रत्नों का अपरिवर्तनीय रहना यांत्रिक स्थिरता है जबकि विभिन्न रासायनिक पदार्थों के सम्पर्क में आने पर भी रत्न के गुणों में बदलाव न आना रासायनिक प्रभाव की स्थिरता है। रेत की रगड से रत्न प्रायः मैले और धुंधले हो जाते हैं। कई प्रकार के पत्थरों को रत्नों में शुमार किया जाता है। हीरा, नीलम, पन्ना, पुखराज, फीरोजा, रूबी आदि रत्न बहुत प्रसिद्ध हैं। रासायनिक ग्रंथों के अनुसार अच्छा मोती गोलाकार, चिकना, भारी तथा ठीक स्थान पर बिछा होना चाहिए। मसूर के आकार वाले हल्के रंग वाले कांतिहीन छोटे-छोटे छेद और कटी-फटी रेखायुक्त मोती दूषित होते हैं। मोती में स्थिरता की कमी होती है इसलिए इसे कीमती रत्नों में स्थान नहीं दिया जाता। मोतियों की माला पहनने से दाह और पित्त शांत होते हैं। सभी रत्नों में प्रमुख हीरा माना जाता है। हीरे में असाधारण गुण माने जाते हैं। इसे निर्भयता और अदम्यता का प्रतीक भी कहा जाता है। हीरा कार्बन का एक अपररूप होता है। हीरा सफेद, लाल, पीला और काले रंग का होता है। हीरा मोटा, चिकना, भारी चोट सहने वाले चमकदार तथा पानी से भरे पीतल के बर्तन में डालकर घुमाने से लकीरें उत्पन्न करने वाला होना चाहिए आठ पहलू या छः कोणों वाला हीरा श्रेष्ठ होता है। धाररहित व तिकोना हीरे का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यों तो हीरे की कांति सभी रोगों में फायदा करती है परन्तु विशेषतः लाल हीरा जरामरण को दूर करता है पीला हीरा शरीर को मजबूत बनाता है काला हीरा रोगों का नाश करता है तथा सफेद हीरा रसायन के काम में आता है। स्वास्थ्य वृद्धि के लिए आवश्यक है कि हीरा कांतिमय निर्दोष और साफ हो। शुद्ध हीरा सभी रोगों का नाश करने वाला, वीर्यवर्धक तथा बलदायक होता है। अशुद्ध हीरा का प्रयोग कदापि न करें इससे कोढ़, पसली का दर्द, पाण्डु रोग, अपंगता आदि हो सकते हैं। हल्की आभामय लालिमा ही नीलम की विशेषता है। अलसी के फूल की तरह आभामान पानी में डालने पर पानी नीला नजर आए ऐसा नीलम सर्वश्रेष्ठ होता है। सेवन करने से (भस्म) नीलम, त्रिदोष, श्वास-कास रस वर्धक तथा वीर्यवर्धक है। गोमेद हिमालय और सिन्धु में प्राप्त होता है। भारी, चिकना चमकदार, अच्छे रंग वाला गोमेद सर्वश्रेष्ठ होता है। इसकी छाया तीन रंगों की होती है लाल, पीली, तथा काली। हल्के विरूप, खुरदरे तथा मैले गोमेद का प्रयोग नहीं करना चाहिए। यह अम्ल उष्ठा, वात नाशक तथा बुद्धि प्रबोधक है। सौन्दर्य बल में भी गोमेद की भूमिका महत्वपूर्ण है। प्रवाल समुद्र से प्राप्त होता है। समुद्र में इसका विस्तार किसी लता की तरह होता है। गोल, पक्की तंदूरी के समान लाल रंग, सीधा साफ लम्बा और चिकना प्रवाल उत्तम होता है। यह शरीर को पुष्ट करने वाला वीर्यवर्धक तथा आखों की ज्योति बढ़ाने वाला होता हैं। यह पाण्डु ज्वर, कासश्वास तथा मेद को नष्ट करने वाला होता है। शुद्ध मूंगे से बना दंतमंजीन दातों को मजबूत, सफेद व चमकीला बनाता है। शुद्ध मूंगे को बारीक पीसकर कपड़े से छान लें और लगभग एक सप्ताह तक गुलाब जल में छांटने से मंजन तैयार हो जाता है। अमलतासा के फूल के रंग वाला, स्निग्ध, नर्म, निर्मल तथा स्थूल पुखराज सबसे अच्छा होता है। काले छेद वाला बेरंग तथा झाई तथा झाई वाला पुखराज दूषित होता है। सभी प्रकार के विषों के प्रभाव को दूर करने में पुखराज का प्रयोग बहुत प्रसिद्ध है। मंदाग्नि, कुष्ठ तथा बवासीर को भी पुखराज की सहायता से दूर किया जा सकता है। चमकदार पीला, चम्पा के फूल के रंग वाला भारी, चिकना, स्वच्छ श्वेत छाया तथा काली कांतिवाला वैदूर्य उत्तम होता है। वैदूर्य को कल्याणकारी माना जाता है। यह रक्तपित्त तथा गुल्म को दूर करता है। प्रत्येक रत्न का नौ ग्रहों से भी घनिष्ठ संबंध है जैसे माणिक सूर्य को, मूंगा चन्द्रमा को, मोती मंगल को, पन्ना बुध को पुखराज बृहस्पति को, हीरा शुक्र को, नीलम शनि को, गोमेद राहु को, बौर वैदूर्य या लहसुनिया केतु को शांत करता है। इन नवरत्नों को धारण करने से नव ग्रहों की शांति होती है, साथ ही इससे लगन, उत्साह और धैर्य बढ़ता है, दरिद्रता नष्ट होती है तथा दीर्घायु व आरोग्य की प्राप्ति होती है। आप अपनी बीमारी के लक्षणों के आधार पर इन रत्नों को हार, अंगूठी या ताबीज द्वारा धारण करके उसे दूर कर सकते हैं। ●●●

**शुद्ध हीरा सभी रोगों का नाश करने वाला, वीर्यवर्धक तथा बलदायक होता है। अशुद्ध हीरा का प्रयोग कदापि न करें इससे कोढ़, पसली का दर्द, पाण्डु रोग, अपंगता आदि हो सकते हैं। हल्की आभामय लालिमा ही नीलम की विशेषता है। अलसी के फूल की तरह आभामान पानी में डालने पर पानी नीला नजर आए ऐसा नीलम सर्वश्रेष्ठ होता है। सेवन करने से (भस्म) नीलम, त्रिदोष, श्वास-कास रस वर्धक तथा वीर्यवर्धक है। गोमेद हिमालय और सिन्धु में प्राप्त होता है। भारी, चिकना चमकदार, अच्छे रंग वाला गोमेद सर्वश्रेष्ठ होता है।**

# गठिया: मोटे लोगों को अधिक सताता है

**मोटापा** बहुत से रोगों से जुड़ा हुआ है, जैसे हृदय रोग, मधुमेह, निद्रा कालीन श्वास समस्या, कई प्रकार के कैंसर और ऑस्टेयोआर्थ्राइटिस आदि का समस्याएं भी मोटापे के कारण उत्पन्न हो जाती है। लेकिन मोटापे से होने वाली सबसे बड़ी समस्या गठिया की होती है। गठिया एक ऐसा रोग है जिसमे हड्डियों के जोड़ो में दर्द होता है या फिर उनमें सुजन आ जाती है। यह रोग शरीर के जोड़ों में होता है जैसे पैर की उंगलियों के जोड़े, हाथ की उंगलियों के जोड़े इसके अलावा कलाई और घुटनों को भी यह रोग प्रभावित कर सकता है। अगर रोगी को गठिया का आक्रमण तेज होता है तो एक सप्ताह या उससे कुछ अधिक चलता है। इस दौरान रोगी को हल्का हल्का बुखार सा रहता है। रोगी की भोजन में अरुचि हो जाती है। रोगी को रोग का आक्रमण कई सप्ताहों या महीनों बाद दुबारा हो सकता है। इस रोग में जोड़ो में यूरिक अम्ल के रवा या क्रिस्टल बनते हैं तथा वे त्वचा के भीतर भी बनते हैं। गठिया के कारण यूरिक अलयुक्त गुर्दे की पथरी की समस्या भी उत्पन्न हो सकती है। इसके कारण पेट में तेज पीड़ा होती है। इसके प्रभाव से गुर्दा ठीक से कार्य करना भी बंद कर सकता है जो की एक अत्यंत गम्भीर स्थिति है क्योंकि गुर्दे के ठीक से कार्य न करने के कारण रक्त में विषेले पदार्थ एकत्र होते रहते हैं। गठिया की खतरनाक अवस्था में शरीर की लाखों कोशिकाएं नष्ट हो जाती हैं जिसके कारण यूरिक अम्ल उतकों में प्रवेश कर जाता है। इस रोग का कारण अत्यधिक शराब पीना, प्रोटीन एवं शर्करा युक्त आहार अधिक खाना तथा व्यायाम न करना है। तनाव भी इस रोग का एक महत्वपूर्ण कारण माना जाता है। अनुवांशिकता भी इस बीमारी का कारण हो सकता हैं। अगर वैज्ञानिक दृष्टि से देखें तो गठिया होने का मूल कारण जोड़ोंए त्वचा और गुर्दे में यूरिक अम्ल के रवे या क्रिस्टल बनना है। गठिया के रोगियों में सामान्य लोगों की तुलना में अधिक मात्रा में यूरिक एसिड बनता है। शरीर में यूरिक अम्ल अधिक मात्रा में होने के कारण यह रक्त में मिल जाता है और रक्त के माध्यम से इस रोग का आक्रमण तेज हो जाता है। मोटापा दुनिया भर में एक प्रमुख स्वास्थ्य समस्या बन चुकी है और अब यह एक महामारी का आकार ले रही है। यह स्थिति अत्यधिक विकसित और विकासशील देशों में है। केवल अमेरिका में ही मोटापा आबादी की एक तिहाई लोगों को अपनी चपेट में ले चुकी है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) का अनुमान है कि दुनिया भर में मोटापा से एक बिलियन लोग प्रभावित हैं। ऐसा मोटापा मापने का पैमाना बॉडी मास इंडेक्स (बीएमआई) के आधार पर कहा जा सकता है। नई दिल्ली स्थित इंद्रप्रस्थ अपोलो अस्पताल के सीनियर कंसल्टेंट हड्डी रोग एवं जोड़ें के प्रतिस्थापन सर्जन डॉ।राजू वैश्य का कहना है कि किसी व्यक्ति का वजन (किलोग्राम में) उसकी ऊंचाई (मीटर में) के साथ आंका जाता है। बीएमआई 30 के बाराबर या उससे अधिक होने की स्थित में मोटापा का प्रभाव होता है, जबकि यही बीएमआई 40 के बराबर या उससे अधिक होने की स्थिति में एक बीमारी का रूप होता है। डा।राजू वैश्य का कहना है कि गठिया समेत कई स्वास्थ्य समस्याओं का सीधा संबंध मोटापा से जुड़ा हुआ है। यह विशेष तौर पर घुटनों के पुराने आस्टियो आर्थराइटिस यानि गठिया को बुरी तरह से प्रभावित करता है, जिससे पीड़ित व्यक्ति असहज और जबरदस्त पीड़ा का अनुभव करता है। घुटनों के जोड़ों को नुकसान पहुंचाने के पुख्ता सबूत शरीर का अत्यधिक वजन है। अधिकतर मोटे व्यक्ति घुटनों के गठिया रोग से ग्रसित रहते हैं, क्योंकि उनके घुटनों को अतिरिक्त मांसपेशियों का भार सहना पड़ता है, जिससे चिकिनी और मुलायम उपास्थि यानि कार्टिलेज का जोड़ प्रभावित हो जाता है। चलने के दौरान शरीर को एक बल से 3 से 6 गुना बार सहना पड़ता है। इसलिए एक आदर्श वजन के साथ अतिरिक्त वजन के बढ़ जाने से जोड़ पर असामान्य उच्च भार पड़ने लगता है और कार्टिलेज में सही तरह से काम करना बंद कर देती है। यही गठिया का कारण बनता है। हालांकि घुटने की पूर्ण अर्थ्रोप्लास्टी(टीकेए) करवाने वाले रोगियों में एक बड़ी सं?या मोटे और मोटापा से ग्रसित लोगों की है। 'मोटापे की महामारी' आने से घुटने के गठिया रोग में और ज्यादा वृद्धि होने की आशंका है, जिससे मोटे लोगों में टीएके की व्यापक बढ़ोत्तरी हो जाएगी। कई सर्जनों का विश्वास है कि अधिक वजन वाले शरीर में टीकेए के परिणाम कम आते हैं। जो घटकों में बढ़े तनाव और आसपास की हड्डियों पर बढने वाले भार के परिणाम के रूप में होता है। मोटापा ग्रसित रोगियों में टीकेए पेरी ऑपरेटिव के खतरे और प्रत्यारोपण के संदर्भ में कुछ विवाद को भी जन्म दिया है। कुछ अध्ययन के अनुसार बुरी तरह से मोटापे ग्रसित लोगों में प्रत्यारोपण की विफलताओं के जोखिम की जटिलताएं उत्पन्न हो जाती हैं। लोगों में मोटापे संबंधी उच्च से निम्न स्तर के खतरे को बताने वाले बीएमआई में कोई निश्चित कट ऑफ नहीं होता है, हालांकि वजनी रोगियों में इसका खतरा ज्यादा होता है। फिर भी हमने देखा है कि मोटे लोगों में आपरेशन के बाद का अच्छे परिणाम कम आते हैं, ये रोगी टीकेए अपनाकर दर्द में काफी सुधार प्राप्त कर सकते हैं। जबकि मोटापा ग्रस्त रोगी के साथ घुटने में गठिया-प्रभावित दर्द से राहत की मिलने की प्रक्रिया से इनकार नहीं किया जा रहा है। ऐसे रोगियों के खतरे का परामर्श महत्वपूर्ण है, साथ ही एक मोटे रोगी के द्वारा स्वास्थ्य की देखभाल के सिलसिले में अतिरिक्त खर्च और सेवा जरूरी हो जाता है। अच्छे परिणामों और रोगियों की संतुष्टि (85 प्रतिशत) में पर्याप्त सुधार से पता चलता है कि बुरी तरह से मोटापाग्रस्त रोगियों में निश्चित रूप से टीकेए उपचार मिलनी चाहिए। इस वर्ग के रोगियों को तकनीक से फायदा होता है, जो एलाइनमेंट की सटीकता को बढ़ा सकती है। सभी मोटे (30 से अधिक बीएमआई) के लिए टीकेए के परिणामों में परस्पर विरोधी प्रदर्शन की समीक्षा की गई है। ●●●

# अखरोट खाने से होता है कई रोगों के निवारण

**जाजहिंदी,** कवसिंग, अकोड, अक्षोट और चारमगज विभिन्न भाषाओं में अखरोट के ही नाम हैं यूग्लांदासी परिवार के सदस्य अखरोट का वानस्पतिक नाम यूग्लांस रेजिआ लिनिअस है। अखरोट एक पर्णपाती वृक्ष है जिसकी ऊंचाई लगभग 30-35 मीटर तक हो जाती है। इसके पत्ते 15 से 35 सेटीमीटर लंबे होते हैं। इसका फल कठोर, गुठलीदार होता है। ये दो प्रकार के होते हैं कागजी और कठोर। इसमें से कागजी अखरोट आसानी से टूट जाता है। इसमें सितम्बर-अक्टूबर में फल लगते हैं। रोपने के बाद इसके फल प्राप्त करने के लिए लंबा इंतजार करना पड़ता है इसमें 8-10 साल का समय लग जाता है। हमारे देश में अखरोट की सबसे ज्यादा पैदावार कश्मीर में होती है। यहां पैदा होने वाले अखरोट की किस्म भी सबसे अच्छी होती है। कश्मीर के अलावा हिमाचल प्रदेश, पंजाब एवं उत्तर प्रदेश के पहाड़ी क्षेत्रों में भी अखरोट उगाया जाता है। अखरोट एक बहुउपयोगी वृक्ष है। यह खाने के लिए प्रयोग तो होता ही है। इसकी लकड़ी भी बहुत उपयोगी होती है। इसके लगभग सभी अंग औषधि के रूप में प्रयोग किए जाते हैं। आयुर्वेद के अनुसार अखरोट के पत्ते स्तंभक बल देने वाले तथा कृमिनाशक होते हैं। इसका हरा छिलका सिफलिसरोधी तथा कफनिस्सारक होता है। इसका तेल मृदु विरेचक तथा उदर कृमिनाशक होता है। इसके अतिरिक्त अखरोट रस में मधुर, पुष्टिकारक, पित्तश्लेष्मा की वृद्धि करने वाला, बलवर्धक, ऊष्णवीर्य, सारक, शुक्रजनक, रूचिकारक, हृदय के लिए हितकर तथा क्षयरोग, रक्त विकार एवं दाह को शांत करने वाला होता है। इसकी गिरी बुद्धिवर्धक होती है। कब्ज दूर करने के लिए अखरोट के तेल को 20-40 मिलीलीटर दूध के साथ नियमित रूप से लेना चाहिए। इससे खुल कर दस्त होता है और कब्ज की परेशानी दूर होती है। गले के घावों को दूर करने के लिए कच्चे अखरोट के सिरके या काढ़े से गरारे करने चाहिएं। नासूरों के इलाज के लिए अखरोट की गिरी को मोम या मीठे तेल में पकाकर नासूरों पर लगाना चाहिए। प्रमेह तथा मूत्र संस्थान के रोगों के लिए भी अखरोट बहुत लाभकारी है। इसके लिए 50 ग्राम अखरोट की गिरी में 40 ग्राम छुहारा तथा 10 ग्राम बिजौले की मींग मिलाकर घी में कूट लें और मिश्री मिलाएं। इस मिश्रण की 25 ग्राम मात्रा का नियमित सेवन करने से बहुत फायदा होता है। शरीर को शक्ति तथा स्फूर्ति देने के लिए भी अखरोट का प्रयोग किया जाता है इसके लिए अखरोट की गिरी में बराबर मात्रा में मुनक्का मिलाकर सेवन करना चाहिए। यदि चेहरा लकवा प्रभावित हो तो प्रभावित भाग पर अखरोट को लेप करके दशमूल या निर्गुडी के काढ़े की भाप लेने से लाभ होता है। स्तनपान कराने वाली माताओं या उन माताओं को जिन्हें दूध नहीं उतरता को गेहूं के आटे में अखरोट के पत्तों का चूर्ण मिलाकर दूध में गूंथ कर, गाय के घी में पूड़ियां तलकर खानी चाहिए। इससे दूध की मात्रा बढ़ जाती है। कुत्ते द्वारा काटे जाने पर, विष के प्रभाव को दूर करने के लिए 10 मिलीलीटर अखरोट के तेल को 50 मिलीलीटर गरम पानी में मिलाकर 6-6 घंटे के बाद रोगी को पिलाना चाहिए। मस्तिष्क की कमजोरी दूर करने के लिए भी अखरोट को गुणकारी माना जाता है। इसके लिए प्रतिदिन 25 ग्राम अखरोट की गिरी का सेवन करना चाहिए। लेकिन चूंकि यह पचने में भारी होता है इसलिए इसका सेवन केवल सर्दियों में किया जाना चाहिए। दर्द या पीड़ा दूर करने के लिए प्रभावित स्थान पर अखरोट के कच्चे फल की ताजा गिरी का लेप करके गरम ईंट या बालू से सिंकाई करने पर पीड़ा दूर हो जाती है। मलय लोग पेटदर्द तथा पेचिश में विशेष रूप से अखरोट का सेवन करते हैं। इसका तेल उदस्थ कृमियों को भी नष्ट कर देता है। ●●●

कहानी

# पासवाले घर की बहू
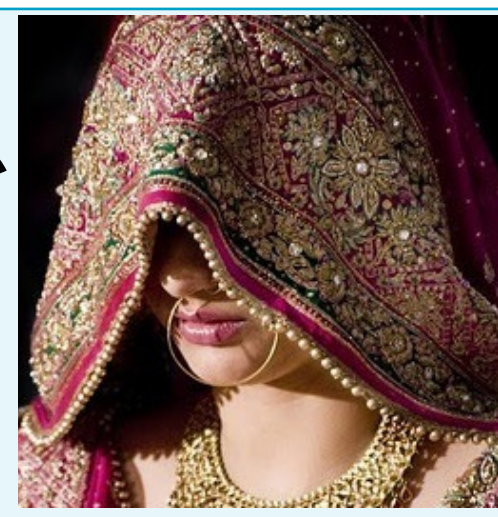
वह आराम से आठ बजे सोकर उठती, चाय पीती, फिर नहा-धोकर सज-धजकर बैठ जाती. लोगों से चहक-चहककर बातें करती, क्योंकि मायका बगल में होने के कारण उसे माता-पिता से दूर होने का एहसास ही नहीं हुआ। ग्यारह-बारह बजे अपने कमरे में चली जाती और घंटों सोती रहती, केवल खाने व चाय के लिए निकलती। सुबह-शाम उसके भतीजे-भतीजी डिब्बा लिए हाज़िर रहते, 'मम्मी ने दिया है, बुआ को बहुत पसंद है।' बार-बार नाम लेकर पुकारने पर भी ऋषभ ने जवाब नहीं दिया। चाय ठंडी हुई जा रही थी, इसलिए विवश होकर मैं ही ऊपर पहुंच गई, जहां रिया अपनी छत पर खड़ी उससे बतिया रही थी। उनके प्रेमभरे 'गुटर गूं' में मेरे तीक्ष्ण स्वर ÷चाय पीनी है? ने विघ्न डाल दिया। रिया वहां से टली नहीं, मुस्कुराकर बोली, नमस्ते आंटीजी। मैंने अभिवादन का जवाब दिया और पैर पटकती नीचे उतर आई, बेशरम कहीं की, मां के सामने ही उसके बेटे से प्रेम की पींगें बढ़ा रही है, कोई लिहाज़-संकोच है ही नहीं। मां, कहां है मेरी चाय? नीचे आकर ऋ षभ ने पूछा। देख ऋषभ, अब तू बच्चा नहीं है, एक ज़िम्मेदार बैंक ऑफिसर है। छत के उस कोने में खड़े तुम दोनों क्या खुसुर-फुसुर करते रहते हो? बचपन में साथ खेलते थे, मैंने ध्यान नहीं दिया। बड़े हुए तो एक ही कॉलेज में थे, सो मैं चुप रही, लेकिन अब, अब क्या बातें होती हैं? मां, हमने बचपन से लेकर अब तक एक लंबा समय साथ में बिताया है, अब तो हमें एक-दूसरे से बात करने की आदत हो गई है। तुम व्यर्थ ही चिंता करती रहती हो। हमारे बीच ऐसा कुछ भी तो नहीं है। हम सिर्फ बात ही तो करते हैं। 'बात बढ़ते समय नहीं लगता। मेरी भृकुटी में बल पड़ रहे थे। अपने योग्य, सुंदर बेटे की पड़ोस की साधारण-सी रिया से नज़दीकियां मुझसे बर्दाश्त नहीं हो रही थीं। ऋषभ के 'कुछ भी तो नहीं है' कहने पर भी मुझे विश्वास नहीं हुआ। रिया के बदले रुख पर मैं हैरान-परेशान रहती थी। आजकल आए दिन कभी पकौड़े की प्लेट, तो कभी अचार की शीशी लिए हाज़िर हो जाती थी। ऐसे ही एक दिन वो घर पर आ धमकी। उसे देख मैंने कहा, 'सूट तो बड़ा सुंदर है। इसे दिखाने आई थी या पकौड़े देने?' 'कुछ भी समझिए आंटीजी, वैसे कैसी लग रही हूं?' 'ठीक है।' मुझे कहना पड़ा, उसे देखकर ही मैं शंकाग्रस्त हो जाती। बचपन में दिन-रात साथ खेलते बच्चों को युवावस्था में अलग कर देना मुश्किल होता है। हम तीन बहनों की संतानों में ऋषभ इकलौता था। पति के खानदान में भी वह सबसे बड़ा और लाड़-प्यार से पला था। उसकी शादी को लेकर हम सबने बड़े सपने संजोए थे, किंतु हमारे सारे अरमानों पर पानी फिर गया। जल्दी ही ऋषभ ने रिया से विवाह की घोषणा करके हम सबको गहरा आघात दिया। हज़ारों कमानेवाले ऋषभ की अकेली विवाहिता बहन रागिनी ने इसका पुरज़ोर विरोध किया। मैंने तो घर छोड़कर जाने की धमकी तक दे डाली, पर ऋषभ प्रभावहीन रहा। बोला, 'आप घर छोड़कर क्यों जाएंगी? मैं ही अलग हो जाऊंगा। बस, रिया से शादी करवा दीजिए।' 'करवा दूंगी। सारे निर्णय तो खुद ले चुका है। शादी भी कर ले।' 'ठीक है, कोर्ट-मैरिज कर लेता हूं। मुझे तो आपके विरोध का कारण समझ नहीं आ रहा है। हमारी जाति की है, पढ़ी-लिखी, धनी परिवार की है और सबसे बड़ी बात मुझे पसंद है।' 'मैंने जैसी बहू की कल्पना की थी, वो वैसी नहीं है। सिर चढ़ी- नखरैल, पता नहीं क्या देखा तूने उसमें?' 'शादी तो मुझे करनी है, मुझे पसंद है वह।' 'भइया! आपको मम्मी से ऐसे बात नहीं करनी चाहिए।' 'तू चुप रह, मम्मी की चमची। अभी दो दिन में संदीप के पास चली जाएगी। तूने भी तो की थी अपनी पसंद से शादी, मैंने कोई विरोध किया था?' रागिनी चुप हो गई, उसने भी प्रेमविवाह किया था, लेकिन मैंने उसमें अपनी सहमति दी थी। मैं कुछ बोलती उससे पहले ऋषभ के पापा बोले, ऋषभ की शादी रिया के साथ ही होगी। जवान लड़का घर से चला जाए, यही चाहते हो क्या तुम लोग? यह सब मैं नहीं होने दूंगा। अब कोई एक शब्द नहीं बोलेगा। शादी की तैयारी करो। उसके बाद सबने चुप्पी साध ली। शादी, बारात तक मैं बिल्कुल शांत रही। मुंह दिखाई में पांच तोले का हार दिया, लेकिन यह देखकर मेरा मुंह उतर गया कि रिया के माता-पिता ने दान-दहेज काफ़ी कम दिया था। हालांकि बारातियों का स्वागत बढ़िया था। रिया की व्यक्तिगत सभी चीज़ें अच्छी क्वालिटी की थीं, पर हर पारंपरिक सास जैसे घर के अन्य सदस्यों व वर के लिए कीमती गिफ्ट व नक़द की अपेक्षा करती है, मैं भी कुछ उसी तरह की अपेक्षाएं पाले बैठी थी, पर ऋषभ के पिता का सख्त निर्देश था कि मुंह खोलकर कोई मांग नहीं की जाएगी। बहरहाल, रिया बहू बनकर हमारे घर आ गई। जब तक घर रिश्तेदारों से भरा था, मैंने उसे आराम करने दिया। वह आराम से आठ बजे सोकर उठती, चाय पीती, फिर नहा-धोकर सज-धजकर बैठ जाती। लोगों से चहक-चहककर बातें करती, क्योंकि मायका बगल में होने के कारण उसे माता-पिता से दूर होने का एहसास ही नहीं हुआ। ग्यारह-बारह बजे अपने कमरे में चली जाती और घंटों सोती रहती। केवल खाने व चाय के लिए बाहर निकलती। सुबह-शाम उसके भतीजे-भतीजी डिब्बा लिए हाज़िर रहते, 'मम्मी ने दिया है, बुआ को बहुत पसंद है।' 'दादी ने फूफाजी के लिए भेजा है।' उन डिब्बों के स्वादिष्ट व्यंजनों से मुझे परहेज़ न था, लेकिन 'फूफा-बुआ मात्र' की भावना चुभ जाती। जिस दिन ऋषभ-रिया नैनिताल जा रहे थे, रिया ने आकर मुझसे कहा था, आप परेशान मत होइएगा, मेरी मम्मी ने रास्ते के लिए खाना बना दिया है।